भारत और बांग्लादेश के संस्थानों के बीच हुआ तकनीक को लेकर समझौता

गन्ना संस्थानों के बीच साझा कार्यक्रम

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान और बांग्लादेश गन्ना अनुसंधान के बीच 27 जून को हुए समझौते में यह निर्णय लिया गया है कि भूमि में 100 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ना तथा 11 प्रतिशत की दर से चीनी उत्पादन करना चाहिए। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए दोनो संस्थानों ने शोध एवं विकास की नई योजनाएं तैयार की है जिसे आगे बढ़ाने के लिए जरूरी दिशा-निर्देश तैयार किये जा रहे हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. ए.के. साह ने कहा कि,- संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीक जैसे- अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, उच्च शर्करा युक्त गन्ना प्रजाति, उन्नत बुआई विधियां, बीमारी व कीटनाशी का जैविक प्रबंधन, केन-नोड तकनीक, बुआई/कटाई एवं पेड़ी प्रबंधन गन्ना यंत्रों, स्वास्थ्यवर्धक गुड़ बनाने एवं भंडारण की उन्नत विधि इत्यादि बंग्लादेश के जलवायु परिवेश में उपयुक्त है जिसे अपनाने से

गन्ना और चीनी दोनो का ही उत्पादन बढ़ सकता है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के उच्च अधिकारियों का दल बंगलादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक, डा. कमल हिमायूं कबीर की अध्यक्षता में लखनऊ में 27 जून से 03 जुलाई, 2013 तक शिक्षण-अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत काम कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्यरत

वैज्ञानिकों / अधिकारियों को संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों, गन्ना विकास के कार्यक्रमों तथा चीनी उद्योग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी जायेगी।

कार्यक्रम की शुरूआत दिनांक 27 जून, 2013 संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन की अध्यक्षता में बंग्लादेश के वैज्ञानिकों तथा संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच एक वैज्ञानिक परिचर्चा आयोजित करके हुई।

डा. सोलोमन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि- संस्थान में पिछले साठ वर्षों में गन्ना शोध में कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं। जिसके योगदान से आज देश गन्ना एवं चीनी में आत्मनिर्भर है। वर्ष 2030 तक 6000 लाख टन गन्ना तथा 360 लाख टन चीनी की जरूरत को पूरा करने के लिए 60 लाख हेक्टेयर जमीन एवं अनुभवों का लाभ उठाकर बंग्लादेश अपने यहां गन्ना उत्पादन व्यवस्था तथा चीनी उद्योग को मजबूत कर सकता है। महानिदेशक, डॉ कमल हिमायूं कबीर ने बंग्लादेश में गन्ना शोध एवं विकास को उपस्थित वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच साझा कार्यक्रम पर कार्य करने की बहुत संभावनाएं हैं और यह बंग्लादेश में चीनी उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक भी है। बंग्लादेश के सकल घरेलू-आवश्यकता 20 लाख टन मिठास का सिर्फ6 लाख टन ही देश में बनता है तथा शेष 14 लाख टन मिठास आयात किया जाता है। कुल 6 लाख टन में से सिर्फ1 लाख टन चीनी तथा 5 लाख टन गुड़ बनता है। साथ ही वहाँ गन्ना उपज 50 टन प्रति हेक्टेयर तथा चीनी परता 5-6 प्रतिशत है जो कि भारत की तुलना में काफी कम है। बंगलादेश में गन्ना विकास का काम चीनी मिल निगम की देख-रेख में ही होता है जिसका प्रबंधन बेहद खराब है। जिस कारण शोध प्रक्षेत्र में गन्ना उपज 80 से 100 टन प्रति हेक्टेयर के बावजूद किसानों के खेतों पर उपज सिर्फ40 से 50 टन प्रति हेक्टेयर है।

वर्तमान में गन्ना क्षेत्रफल 2 लाख हेक्टेयर है जो कि घटकर 1.5 लाख हेक्टेयर होने की संभावना है। इन सभी समस्याओं के कारण वहां गन्ना तथा चीनी बढ़ नहीं रहा है जिस कारण बंग्लादेश सरकार काफी चिन्तित है। इस दिशा में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक अपने तकनीकी अनुभवों से बंग्लादेश में स्थिति बेहतर करने में बहुमूल्य योगदान कर सकते हैं। डा. कमल ने इस मौके पर गन्ना शोध एवं विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आई.आई.एस.आर. के साथ साझा कार्यक्रम चलाने पर अपना प्रस्ताव रखा। प्रजाति विकास, जर्मप्लाज्म आदान-प्रदान, ज्ञान एवं अनुभव का आदान-प्रदान, वैज्ञानिकों का एक-दूसरे देशों में भ्रमण, शोध एवं विकास में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का क्षमता विकास कार्यक्रम इत्यादि विषयों पर आपसी सहमति से साझा कार्यक्रम की रूपरेखा तय की जा सकती है जिससे दोनों देश इसका लाभ उठा सकें।

इस अवसर पर संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डा. ए.के. शर्मा ने संस्थान की उपलब्धियों, संगठन संरचना एवं वर्तमान में चल रहे शोध कार्यक्रमों पर एक संक्षिप्त परिचय मेहमानों के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रशिक्षण-अध्ययन एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वयन संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रकोष्ठ की प्रभारी डा. एम. स्वप्ना के द्वारा किया जा रहा है।

sunday pioneer
LUCKNOW | SUNDAY | JUNE 30, 2013

IISR international collaborations increase

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

International collaborations of the Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) have increased at a brisk pace in the past several years.

IISR spokesperson AK Sah told 'The Pioneer' that the international cell of the institute was making good progress in finalising collaborations.

"We have had the opportunity to have several interactions with international institutes. These collaborations help both the institutions—the other institutes learn from us and we also learn from them," he said.

Sah said that sugarcane production knowledge could be shared if countries interacted with each other.

The scientist said that these collaborations were very useful and in fact they had brought repute and visibility to the institute.

The IISR spokesperson said that the international cooperation cell of the institute had been in existence for quite a few years but it had become active recently.

Giving details of the visits that took place in the institute from 2011 to 2013, Sah said a 5-member delegation led by DG of Cabinet rank minister from Ethiopia visited the institute on March 31, 2011 and held interactions on research, training and transfer of technology in the tentative collaboration area of germplasm water management and human resource development, while in

"We have had the opportunity to have several interactions with international institutes. These collaborations help both the institutions—the other institutes learn from us and we also learn from them"

August, a 5-member delegation visited the IISR to explore joint collaboration in knowledge transfer.

He said a 4-member delegation from Indonesia visited the institute on September 26 to explore the areas of joint collaboration, particularly in tissue culture training.

From April 18 to 21, 2012, IISR Director S Solomon visited Sau Paulo, Brazil, for Indo-Brazilian cooperation in bio-energy and a collaborative programme was underway.

On June 2, 2012 a 5-member delegation of Sri Lanka led by Minister for Minor Crops Export Reginald Cooray visited the institute for studying IISR technology and sugar industry. Talks are underway with Sri Lanka on joint collaborative work in various areas of sugarcane research and development.

From December 17 to 29, 2012, three scientists of Sri Lanka Sugarcane Institute visited the IISR for a two-week training cum familiarisation programme

From June 16 to 20, 2013, Lakshman Senewiratne from Sri Lanka's Sugar Industry Development Ministry and two scientists visited the IISR to study research programmes, the technology developed by the institute and functioning of sugar industry in India.

Besides, a 6-member delegation from China led by Dr Yang-rui Li, president of Guangxi Academy of Agricultural Sciences, Guangxi, China, came to the institute for an interaction and visit to IISR labs and experimental fields. The area of collaboration is yet to be decided.

From May 21 to June 4, 2013, three scientists from Bangladesh Sugarcane Research Institute, namely; AKM Rashadul Islam, Mohammad Abu Taher Sohel and Mohammad Nuray Alam Siddiquee, visited the IISR on a 2-week training-cum-visit programme on sugar beet cultivation, juice extraction and sugar processing systems and collaboration areas are being explored.

A 6-member delegation of Bangladesh led by Bangladesh Sugarcane Research Institute Director General Kamal Humayun Kabir is presently on a visit to the institute from June 27 to July 3 for detailed interaction with scientists, study of sugarcane technologies developed by IISR and for exploring areas of sugarcane research for joint collaboration.